International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संजीव के उपन्यासों में हाशिए के समाज का संघर्ष फॉस उपन्यास के सन्दर्भ में

डॉ0 विजय कुमार शर्मा
शोध निर्देशक
ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
शासकीय महाविद्यालय, आलमपुर भिंड, मध्य प्रदेश
सम्बद्ध जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर मध्य प्रदेश

सपना पाठक
शोधार्थिनी
नेट, जे0आर0एफ0
हिन्दी विभाग
शासकीय महाविद्यालय, आलमपुर भिंड, मध्य प्रदेश
सम्बद्ध जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर मध्य प्रदेश

सारांश–

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में हाशिए के समाज का स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है। जब से साहित्य की लिखित रचना हुई है तब से ही हाशिए के समाज के लोगों का साहित्य में उल्लेख प्राप्त होता है। हाशिए के समाज में एक वर्ग विशेष के लोग ही आते हैं। "हाशिए के समाज में दलित, आदिवासी, स्त्रियाँ, किसान, मजदूर आदि की गणना की जाती है जिनकी आबादी कुल आबादी की लगभग तीन चौथाई होती है। इसके साथ ही स्त्रियों को आधी आबादी कहने का प्रचलन भी है। यह बहुसंख्यक आबादी वाला समाज ही राष्ट्र की मुख्यधारा है जिसे अलगावादी समाज–व्यवस्था में शिक्षा, सत्ता–संस्कृति और आर्थिक संसाधनों से वंचित कर हाशिए पर ढकेल दिया गया है।"[1]

मुख्य शब्द–साहित्य,सामाजिक व्यवस्था,आदिवासी, स्त्रियाँ, किसान, मजदूर

******

अर्थात् हाशिए का समाज वह वर्ग या समुदाय है जो सामाजिक व्यवस्था में सम्पन्न वर्ग जैसे सुख–सुविधाओं, बैद्धिकता, सुविधा से वंचित है। इनकी अलग लोक–व्यवस्था, रहन–सहन, खान–पान है। ये लोग अपने पहनावे से पहचान में आ जाते हैं।

संजीव के उपन्यासों में इन अछूते वर्गों को विशेष और महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। 'किसनगढ़ के अहेरी' सर्कस, धार, पॉव तले की धूप, सावधान! नीचे आग है, आदि उपन्यासों में दलित, किसान, मजदूर, निम्न वर्ग का मार्मिक चित्रण हुआ है। संजीव के उपन्यासों के पात्र किसान, मजदूर, आदिवावी, दलित और अति निम्न वर्ग से आते हैं। ये पात्र खदान मजदूर, कारखानों, तेजाब बनाने वाले फैक्ट्री, कोयला खदानों में काम करते हैं और अपना जीवन निर्वाह करते हैं। स्वार्थी लोग,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सामंतवादी, उच्च वर्ग, महाजन ठेकेदार, पुलिस, प्रशासन आदि इन वंचित समुदाय का मानसिक–आर्थिक व शारीरिक शोषण करता है।

संजीव के 'फॉस' उपन्यास में विदर्भ के किसानों की दयनिय दशा का चित्र उभरता है। इक्कीसवीं सदी में जब मजदूर 'फॉस' उपन्यास में शिबू, शकुन और उसके बच्चों को आर्थिक रूप से प्रस्तुत किया है। बनगांव में रहने वाले क्षेत्र छोटे किसान है जो सीमान्त खेतों पर कृषि कार्य करते हैं। बनगांव में कहारों, चमारों, कुनबियों, भोग, मछुआरों और आदिवासियों की विभिन्न आबादी है। इस गांव में शिबू या शकुन अपने परिवार के साथ रहते हैं और आर्थिकोपार्जन के लिए कृषि कार्य करते हैं। एक दिन एक किसान ने कर्ज के कारण आत्महत्या कर ली। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए शकुन कहती है "इस देश का किसान कर्ज में ही जन्म लिया है, कर्ज में ही जीता है और कर्ज में ही मर जाता है।" पिछले बरस सात हजार किसानों ने आत्महत्या की थी। अखबार, रेडियों, टी०वी० सबने अफीम खा ली खबर तक नहीं हुई।"[2]

संजीव ने 'फॉस' उपन्यास में ऐसे वर्ग के जीवन को उभारा है जो देश के लिए अन्य उत्पादन करता है। जिसका देश की राष्ट्रीय आय में सबसे अधिक योगदान रहता है। ऐसे वर्ग के लोग अच्छे जीवन स्तर के लिए जीने को तो दूर..... बल्कि आत्महत्या कर रहे हैं। सरकार, अन्य संस्थाओं, बैंगो, साहूकारों, अखबार वालों को इनके आत्महत्या से कोई फर्क नहीं पड़ता है। यही हमारे समाज की सबसे बड़ी बिडम्बना है।

किसान का सपना उसके खेत में बंधे गाय–बैल होते हैं। शीखू का 'लालू' (बैल) अपने बनजारी वाले खेत को जोत रहा था कि अचानक हल का फाल मिट्टी में फँस गया जिससे 'लालू गिर' गया फिर नहीं उठा। जंगल में सिपाही बैठ था जो शकुन और गांव वालों को जंगल से लकड़ी, फल, पत्ते लाने पर जेल में बन्द करने की धम्की देता था। सूखे के समय में जंगल से कुछ न कुद मिल जाता था। शकुन कहती है कि, "कहने की दो एकड़ की खेती। मिला क्या? कापूस तो एकदम से दगा दे गया, मका सिर्फ नाम का जो थोड़ी बहुत उम्मीद है, वह धान से। वह भी कितनी! दो साल से तो सूखा है। यह तो कहो, पास ही जंगल है जिससे बहेरा, शाल के बीज, पावा, बाँस, लकड़ी आदि से कुछ–न–कुद मिल जाता है, वरना तो ब्राह्मणों की टहलुअई करते बीतती।"[3]

ऐसे वर्ग जिनकी पास अपनी खेती–बाड़ी है वे भले ही सीमान्त खेती करते हैं, उनको प्रत्येक बार खेती से नुकसान होता है किन्तु फिर भी आस नहीं जाती है। शकुन को इस बात का संतोष है कि वह अपनी जमीन पर खेती करती है। अन्यथा वह शोषण का शिकार हो जाती है।

"वहाँ गांव में सात कुँए, पर किसी पर भी उन लोगा को पानी नहीं भरने देते। कलशी, गगरा लेकर दूर खडें रहों। सब के भर लेने के बाद किसी कुनली–मराठे ने दया करके उनके बर्तनों में पानी डाल दिया तो डाल दिया, वरना इंतजाम करों।"[4]

ग्रामीण–संरचना में आज भी कुँऐ से पानी भर लेने या छू लेने से पानी को छुआ लगने का प्रचलन है। अतः दलित, वंचित समुदाय के लोग दूसरे उच्च वर्ग वालों के दया का इंतजार करते रहते हैं। ऐसी स्थिति भारतीय सामाजिक संरचना को स्तरहीन बनाने के लिए पर्याय है जिसका संजीव ने अपने उपन्यासों अनिवार्य अभिव्यक्ति प्रदान की है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संजीव ने इस उपन्यास है किसानों, दलितों, आदिवासी ह्रास चलाये गये आन्दोलन का उल्लेख किया है। सरकार ने सन् 2002 में कपास का बी०टी० कॉटन महलीज किसानों को यह देकर दिया था इसमें कीड़े नहीं पड़ते और फसल अधिक होती है। सरकार ने कर्ज भी दिये और कीटनाशक दवाईयों भी दिये किन्त एक दो फसल के बाद यह बीज फिस्स हो गया। तब 2004 में विभिन्न दलों ने आन्दोलन किया था "2004 में बिखरे दलों को लेकर तीसरा मोर्चा बना। दलित, आदिवासों भारतीय रिपब्लिकन पार्टी, ओ.बी.सी., अल्पसंख्यक, बहुजन समाज और कम्युनिष्ट पार्टियों का संयुक्त मोर्चा। खद प्रकाश अम्बेडकर जो शामिल हुये थे मोर्चा में.....।"[5]

शेतकरी में लागतार धारा लेने से कर्जदार किसान आत्महत्या कर रहे थे किसानों को खेती के प्रति अब मन नहीं लगता था। वे अपने पढ़े–लिखे बच्चों को खेती नहीं कराना चाहते थे। किसान अपने खेतों को बेचकर सरकी नौकरी की तलाश करने लगे। "शेत बेचकर पढ़ाया अब शेत बेचकर घूस दो। नौकरी लगेगी या नहीं कोई गारण्टी नहीं। पढ़े–लिखे लड़के शेती करना अपमान समझते हैं।"[6]

गाँव के कई किसानों ने खेती–बाड़ी बेचकर चपरासी की नौकरी हासिल कर ली थी। अब वे इसी बात से खुश से कि महीने के बंधे हुई सैलरी तो आयेगी।

सरकार ने किसानों और आदिवासियों की दुर्दशा को देखते हुए उनके कर्ज माफ कर दिये और गाये प्रदान की ताकि किसानों के साथ–साथ वे गाये का दूध बेचकर अपनी आमदनी बढ़ा सके।

उस वर्ष विदर्भ में भयंकर सूखा पड़ा, जानवरों को क्या खिलाते यहाँ तो इंसानों को खिलाने के लिए भी कुछ न बचा था। यह भी एक विचित्र संयोग था कि सूखे से किसान परेशान थे तो आदिवासी खुश थे। 'कोबला' आदिवासी गाय के महत्व को समझ नहीं पाये और सूखा ग्रस्त क्षेत्र होने के कारण वे गाय को ही अपना भोजन बनाने लगे। संजीव की दृष्टि में सरकारी योजना का लाभ गलत ढंग और योजना के माध्यम से किया जाता है। इसलिए वंचित समुदाय इसका समुचित लाभ प्राप्त नहीं कर पाता है।

सुनील एक समझदार और किसानों को कृषि के लिए प्रेरित करने वाला नौ जवान था। वह कहता था कि, "एक भी आदमी ने अगर मेरे रहते आत्महत्या की तो पेरे जीवन को धिक्कार है और उसी सुनील ने सबसे पहले आत्महत्या की। दो ही साल में पस्त और परास्त।"[7] सुनील क्या करता यदि आत्महत्या नहीं करता, आसमान से पानी गिरता नहीं और अकाल इतना भीषण की कुएँ, पोखर सब सुख गये।

निष्कर्ष –

संजीव के उपन्यासों में वंचित समुदायों के राग–अनुराग, दुख–सुख, हास–परिहास और जीवन मूल्यों का यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है। शीबू, सुनील, नाना, शकुन, हमारे आस–पास, गांव देहात के संजीव लोग हैं जो अपने जीवन–संघर्षों से हमारे बीच अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. यादव चौथीराम – उत्तरशती के विमर्श और हाशिए का समाज, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स,दिल्ली, प्र०सं० 2014, पृ०–15.
2. संजीव– फॉस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र०सं० 2015, पृ०–15.
3. संजीव –फॉस, पृ०–25.
4. संजीव –फॉस, पृ०–26.
5. संजीव –फॉस, पृ०–38.
6. संजीव –फॉस, पृ०–38–39.
7. संजीव–फॉस, पृ०–72.